(1)

14/8/20

B.A. I Year
Hindi Hons, Paper I
मध्यकालीन
हिन्दी काव्य

डॉ० अनुराग कुमार
टेम्पररी असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग,
शम्भु दयाल कॉलेज
गाजियाबाद

प्रश्न :- सूरदास के प्रस्तुत पद की व्याख्या करें।

मधुबन तुम कत रहत हरे।
बिरह बियोग स्यामसुंदर के, ठाढ़े क्यों न जरे।
मोहन बेनु बजावत तुम तर, साखा टेकि खरे।
मोहे थावर अरु जड़ जंगम, मुनि जन ध्यान टरे।
वह चितवनि तू मन न धरत है, फिरि-फिरि पुहुप धरे।
सूरदास प्रभु बिरह दवानल, नख-सिख लौं न जरे।।

उत्तर :- प्रस्तुत पद सूरदास द्वारा रचित है जो हमारी पाठ्य पुस्तक मध्यकालीन हिन्दी काव्य से लिया गया है।

प्रस्तुत पद में गोपियों की विरह व्यथा का वर्णन है। आध्यात्मिक विरह व्यथा के आलोक में गोपियाँ मधुबन को हरे-भरे होने पर कोसती हैं। वह चाहती हैं कि कृष्ण के वियोग में जैसे वे दुःखी हैं उसी तरह मधुबन को भी होना चाहिए।

गोपियाँ मधुबन को कोसती हुई कहती हैं – हे मधुबन! कृष्ण के वियोग

क्रमशः :-

B.A. I year (2) 14/8/20 क्रमशः:

Hindi — सूर के पद की व्याख्या —

हे मधुबन तुम हरे-भरे क्यों रहते हो। तुम आज तक प्रसन्न क्यों रहते हो। कृष्ण के विरह वियोग में तुम जल क्यों नहीं गये। वास्तव में तो तुम्हें भी कृष्ण के वियोग में सूख जाना चाहिए था।

कभी तुम्हारे ही नीचे खड़े होकर कृष्ण तुम्हारे ही डाल का सहारा लेकर वेणु बजाया करते थे। तुम्हारी छाया में खड़े होकर कृष्ण जब वेणु बजाया करते थे तो तुम्हारी भी शोभा और अधिक बढ़ती थी।

जब कृष्ण वेणु बजाते थे तो मुरली की मधुर ध्वनि सुनकर सारे जड़-चेतन मग्न हो जाते थे। मुरली की ध्वनि का सारे संसार में बड़ा ही मनोमुग्धकारी प्रभाव होता था। मुरली की ध्वनि सुनकर लोग सारे जड़ चेतन मग्न होकर आनंदित हो जाते थे तथा मुनियों का ध्यान भी टूट जाता था।

गोपियाँ कहती हैं कि — हे मधुबन! तुम उन शोभा धारक वृक्षों को क्यों नहीं स्मरण करते हो। ये सारे आश्चर्यजनक कार्य तो तुम्हारी ही छाया में होते थे। उनका तुम्हें ध्यान रहता तो तू यूँ हरे भरे आज नहीं होते। आज तुम्हें कृष्ण के वियोग में सूख जाना चाहिए था।

सूरदास कहते हैं गोपियाँ कहती हैं कि कृष्ण के वियोग में, हे मधुबन तुम्हें जड़ से सिर तक जल जाना चाहिए।

क्रमशः —

...st thing about success is that you hav...